Review Of Research
ISSN:-2249-894X
Impact Factor : 3.1402(UIF)
Vol. 4 | Issue. 4 | Jan. 2015
Available online at www.ror.isrj.org

"मणि मधुकर की कहानियों में नारी चेतना"

Ade Mantri Ramdhan

Tuljabhavani Mahavidhalaya Tuljapur Tq. Tuljapur Dist. Osmanabad.

सारांश – मणि मधुकर का समकालीन साहित्यकारों में अग्रणी स्थान है। वे हिन्दी साहित्य के मुर्धन्य साहित्यकार है। उन्होने कई विधाओं में उत्कृष्ट लेखन कार्य किया है। मणि मधुकर चाहे नाटककार हो, उपन्यासकार हो या कहानीकार हो उनके सृजन का सबसे बडा प्राणतत्व कथा है। उनके कथा साहित्य में समाज के उसी यथार्थ का प्रतिबिंब परिलक्षित होता है। कथानक लोक जीवन से ग्रहण करते है। परिवेश में व्याप्त विषाद की छाया को पकडने का प्रयास अपने साहित्य में किया है। उनका बचपन का जीवन रेगिस्तान की गाँव की मिठी से जुडा है। "मै जयसेलमेर का रहनेवाला हूँ और वहाँ रेगिस्तान है रेगिस्तान का जीवन अपना अलग किस्म का जीवन है। शायद हिन्दुस्तान में दुसरी जगह ऐसा जीवन कही नही है।

प्रस्तावना –

वहाँ के जो संस्कार है, मेरे जीवन को प्रभावित करते है मेरी कहानीयों में रेगिस्तान का जीवन व्यापक रूप में व्यंजित हुआ है।"[१] उनका कहना है उन्हे उनके रचनात्मक अहसास उनके अपने परिवेशिक इतिहास से प्राप्त होते है। साहित्य के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ नाटककार के रूप में जाने जाते है। उन्होने नाटक के साथ उपन्यास, कहानी, विधा का लेखन भी किया है। समकालीन हिन्दी साहित्य के प्रतिभा संपन्न हानीकार के रूप में साहित्य में उनका अलभ स्थान है।

मणि मधुकर के अब तक पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है। 'हवा में अकेले', 'भरतमुनि के बाद', 'एकवचन बहुवचन', 'चुनिंदा चौदह', 'त्वमेव माता', आदि कहानी संग्रह है। उनकी कहानीयों में वेश्याओं की त्रासदी, अकेलेपन की त्रासदी, अनैतिक सम्ब-ध, अकाल पारिवारिक संघर्ष, भूख की समस्या, भ्रष्ट व्यवस्था, टूटते हुए दाम्पत्य सम्बन्धों आदि विविध विषयों को स्पर्श इनकी कहानीयाँ करती है। उनकी कहानीयों में मानवीय मूल्यों की चर्चा अधिक मिलती है। इन कहानी संग्रहो में जिसमें नारी चेतना की अभिव्यक्ति हुई है। उनका विश्लेषण इस छोटे से आलेख में निहित है।

प्रतिपक्षः 'हवा मे अकेले' इस कहानी संग्रह की कहानी है। इस कहानी में मणि मधुकर ने एक ऐसी नारी का चित्रण किया है जो पति के रहते हुए भी अन्य पुरूष से सम्बन्ध रखने में कोई बुरा नही मानती विवाह के पश्चात नारी का पर पुरूष से सम्बन्ध कई कारणोसे होता है पति या परिवार द्ववारा दी जानेवारी यातनाएँ, मौन असंतुष्टता या पति का अन्य नारी सम्बन्ध ये महत्वपूर्ण कारण होते है। मणि मधुर इस कहानी में स्त्री एक विधान सभा के एक निर्दलीय सदस्य है। पति की अनुपस्थिति में वह अपना हाथ विनम्रता और संकोच से पर पुरूष के हाथ में देती है और कहती है। - "मै तीन बच्चो की माँ हुँ एक शरीफ आदमी की बीबी हुँ तुम मेरे संतोष और सुख की सीमाएँ जानते

हो।"[२] वह स्त्री केवल अपना सूख चाहती है। प्रेम के चक्कर में वह पडना नही चाहती। वह अपनी बेटी को पढ़ाना चाहती है। किसी अच्छी स्कूल में दाखल करना चाहती है। स्त्री के पति को दफ्तर से फूरसत नही मिलती है। स्त्री पर पुरूष से कहती है। "बात यह है कि मै अपनी बडी लडकी को देहरादून के किसी अच्छे स्कूल में भर्ती कराना चाहती हूँ। दूर रहेगी तो पढ़ाई में मन लगेगा.... मै अकेली कैसे जाऊँ ? सेशन खतम होने पर तुम साथ चल सकोंगे...उन्हे तो दफ्तर से फूरसत नही मिलती।"[३] वह जानती है शरीर सम्बन्ध से अगर काम पूरा होता है तो क्या बुरा है। पति-पत्नी का संबंध जन्म-जन्मांतर का माना जाता है किन्तु आज के युग में सम्बन्ध खोखले पडते जा रहे है। कही एक साथ रहकर भी केवल पति-पत्नी की विवशता को निबाहने के लिए बाधित है। नारी व्यावहारिक जीवन को ही महत्वपूर्ण मानकर जीवन यापन करने लगी है।

फरिश्ते : 'हवा में अकेले' इस कहानी संग्रह की कहानी है इस कहानी में परिवार के हालत से मजबुर होकर विवाहित स्त्री को न चाहते हुए भी मजबुर होकर अनैतिक सम्बन्ध स्थापित करने पडते है। परिवार की हालत देखकर उसे बहोत दुख होता है। वह यह देखकर स्त्री दुसरों के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखती है। लेखक कहता है - "इस तरह के फरिश्ते कभी कभी हमारे घर आते थे और माँ कुछ देर के लिए उनके साथ चली जाती थी और कोई चारा भी नही था। एक निर्जीव समझ□ा रिश्ता उनके और माँ के बीच कायम हो गया था"[४] र□□त्र : 'एकवचन बहुवचन' इस कहानी संग्रह कहानी है। इस कहानी में राजनीति में सक्रिय स्त्री हेमा के चरित्र और वाचक के भगोडेपन का चित्रण ले□□ ने f□या है। इस कहानी में हेमा नायिका है। हेमा स्वछंद जीनेवाली नारी है। वह प्रमुख आज की आधुनिक नारी है। वह अपना हुकुमत जताना चाहती है। उसे किसी पुरूष के अधिकार में जीना नही है। उसे राजनीतिक में भाग लेना है। हेमा चुनाव भी लड़ती है किन्तु अंत में हार जाती है। हेमा अपने पति से तलाक लेकर स्वछंद जीवन जीना चाहती है। वह हाफिस के साथ अपने यौन संबंध स्थापित करती है। इस कहानी को अश्लील कहानी भी कहा जा सकता है। इस कहानी में आज के राजनीतिक जीवन को व्यक्त करनेवाले कथन है - "क्यों नही तुम मन्त्रियों के साथ रहकर उन्हे प्रसन्न रखते ? बेकारों को नौकरियाँ दिलवा सकते हो। मेडीकल और इंजीनियरिंग के छात्रों को प्रवेश दिलाकर तुम कुछ कमाई भी कर सकते है। एक दाखले के चार हजार। दो तुम्हारे दो मन्त्री के।"[५] ये कहानी आज के निकम्मे और भ्रष्ट तन्त्र को एक एक्सपोजर तो दे ही जाती है।

चन्द्रग्रहण : कहानी में पारिवारिक मूल्यों की हिमायत करती है। इस कहानी में मूल्य विघटन की एक दु:खद घटना का चित्रण किया है। एक सामान्य कोटी की कहानी है। जुगनी एक मातृ पितृहीन लड़की है। माता पिता न होने के कारण वह अपनी जीजी के यहाँ रहती है। उस की जीजी इस कहानी की केंद्र बिन्दु है। जीजी का धरम का भाई मनसा है वह जीजी के घर आता जाता है। भाई-बहन एक संबंधों की एक पारंपारिक पवित्रता की संस्कृति चलते आई है। किसी पराये स्त्री ने पराये पुरुष को भाई कहा तो वह अपनी मूँह बोली बहन की हर सहायता एवं रक्षा करना अपना धर्म मानता है। कुछ ऐसे भी भाई होते है जो बहन के रव्वाबो एवं अरमानो का गला घोंट देते है। मनसा अपनी धरम की बहन जीजी के साथ सम्बन्ध रखता है। जुगनी को जीजी के यौन सम्बन्ध जानकर आघात लगता है। जुगनी को जीजी कहती है - "अपने जिज्जा से भी नही। एक औरत को ..... दुसरी औरत का भेद छुपाकर रखना चाहिए। कुछ बरसो के बाद तुम सब समझ□ा जाओगी।"[६] जब जीजी का मनसा और उसका भेद खुलता है। उसी दिन एक कुएँ में गिरकर उसकी मृत्यू हो जाती है। एक स्त्री की पुश्चलता और ईश्वरीय न्याय के अनुकूल दुर्घटनावश कुए में गिरकर उसकी मृत्यू हो जाती है पर यह स्थिति कम दु:खद नही है इस मूल्य विघटन के युग में भाई-बहन के रिश्ते की पवित्रता की खंडित हो चली है। यहाँ मुँह बोला भाई है जो अपनी मुँह बोली बहन के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखता है। यह कह सकते है की यौन सम्बन्धों के लिए ही इस पवित्र रिश्ते को ढाल बनाया जाता है।

'एक बाँह कटी हुई' कहानी की प्रमुख नायिका सायरा है। उसका पति चपराशी है। सायरा को तीन बच्चे है। उसका पति उसे हमेशा मारता रहता है। बेचारी क्या करती रोज के इस मारझोड से तंग आकर घर छोडने का निश्चय कर लेती है। सायरा को अपना जीवन ऐश आराम से भरा हुआ चाहिए। उसके पति को तनखा कम है। जिसके कारण अपनी उपजीविका भगाने के लिए सायरा एक कोठे पर चली जाती है। पति की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण कोठे पर अनेवाले अनेक लोगो के साथ सायरा अनैतिक सम्बन्ध रखती है। वहाँ उसे बली मिल जाता है। वह उसे छोडना नही चाहती। अपनी उपजीविका भगाने के लिए सायरा कोठे पर चली जाती है वहाँ □ा दर्द वेदना को वह सहती नही है। पति एक स्कूल मे चपराशी है जो सूख नही दे सकता। जिस बली पर वह भरोसा करती है। जब उसे पता चलता है की बली का अनैतिक सम्बन्ध कोठेवाली से है तो सायरा बली का मूँह निचोड देती है। सायरा एक स्वार्थ नारी है। वह केवल अपना सूख चाहती है। पति-पत्नी का सम्बन्ध शाश्वत और जन्म जन्मांतर का माना जाता है। किन्तु आज के युग में ये सम्बन्ध खोखले पडते जा रहे है। विवेच्यकालीन प्रतिनिधी कहानियों में भी पति-पत्नी सम्बन्ध खोखले और अजनबीपन को लिए हुए दिखाई देते है। आर्थिक दबाव के नीचे पनपते अनैतिक सम्बन्धों का चित्रण मणि मधुकर ने इस कहानी में किया है। भूख शरीर बेचने के लिए मजबूर करती है। भूख छल धोखाधडी, कपट, झूठ और शर्मिन्दा होने के लिए मजबूर करती है। अपनी ऐश आराम की जिन्दगी की भूख के लिए

सायरा न चाहते हुए भी एक कोठे पर चली जाती है। मणि मधुकर ने मध्यवर्गीय पारिवारीक जीवन को लेकर कहानी को अभिव्यक्त किया है।

बेताल कथा : 'चुनिदा चौदह' कहानी संग्रह की कहानी है। दम्मो कहानी की प्रमुख नायिका है। दम्मो का पति छगनलाल है। वह एक वन विभाग में ठेकेदार है। उसे शराब पीने की आदत है। हमेशा नसे में रहता है। दम्मो अपना सूख चाहती है। वह भोगवादी नारी है। उसकी शादी को आठ साल हो गये है। अभी तक उसे कोई बच्चा पैदा नही हुआ है। हमेशा दम्मो मायूशी में जिती रहती है। प्रवृत्तियों के अनुसार नारियाँ अलग-अलग स्वभाव की होती है। हर नारी किसी न किसी बात की चहेती होती है। दम्मो को जो सूख छगनलाल से नही मिला वह शरीर सुख दम्मो को निक्की से मिलता है। दम्मो और निक्की दोनो मिलकर पति छगनलाल को दो बोतल केसरी कस्तुरी विषमिली शराब पिलाकर मार दिये जाने बाद पलंग के नीचे उस लाश के पडे होने के बावजूद उसी पलंग पर दम्मो का निक्की के साथ सोना एक गहरी घृणा का भाव पैदा करनेवाला दृश्य है - "मरने दो मैने उसका इन्तजाम कर दिया है मै जीना चाहती हूँ... लेकिन लाश... नीचे पडी रहेगी मै तडके जल्दी उठ़कर ठिकाने लगा दूँगा।"[७] भारतीय संस्कृति में विवाह को एक पवित्र संस्कार माना जाता है। विवाह दो भावनाओं का दो व्यक्तियों का मिलन होता है। लेकिन वास्तविकता कुछ अलग है। दम्मो जैसे नारी के कारण विवाह जैसे पवित्र रिश्तों का गला घोटता हुआ दिखाई देता है। दम्मो अपने शरीर की भूख मिटाने के लिए अपने प्रेमी निक्की के साथ मिलकर पति को मार देती है। आज समाज में ऐसे कई नारियाँ दिखाई देती है। जो अपने पति के लिए अपने आप को न्यौछावर कर देती है। लेकिन दम्मों जैसी नारीयों के कारण नारी जाती पर एक बहोत बडा कलंक लगा है। दम्मो का पाँव भारी है। वह पेट से है। उसके गर्भ में निक्की का वंश पल रहा है। निक्की दम्मो को कहता है - बेगम तुम्हारा मन यहाँ लग जाता है ?"[८] इस प्रकार हमारी संस्कृति में एक ओर अपने परिवार तथा घर को संवारनेवाले नारीयाँ भी है तो दुसरी ओर पति को जहर देकर मारनेवाली दम्मो जैसी नारीयाँ समाज में दिखाई देती है।

त्वमेव माता : त्वमेव माता कहानी संग्रह से कहानी का नामकरण मणि मधुकर ने किया है। इस कहानी की प्रमुख नायि ा बतियाँ है। उसके माँ बाप नही है। वह भील जाती की है। अपना पेट भरने के लिए अनेक लोगो के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखती है। वह बिनब्याही कुमारी माता है। शादी के पहले सम्बन्ध को समाज में पाप माना जाता है। दो वक्त की रोटी प्राप्त करने के लिए बतियाँ को अपने शरीर को बेचना पडता है। बतियाँ का गाँव के अनेक लोगों के साथ अनैतिक सम्बन्ध है। गाँव के मालिक चौधरी धुल्या के यहाँ जानवरों के बाडे को संभालकर अपना गूजारा करती है। उसे अहमद फौजी मिलता है। उस पर असक्त होकर बतियाँ एक दिन अपने आप को उसे सौंप देती है, एक दिन उसे पता चल जाता है की फौजी वह लडाई के लिए फौज में लौट गया बाद में वह वापस नही आया। बतियाँ 'मै' को बहोत चाहती है। 'मै' एक मिस्तरी है। बतियाँ 'मै' से पहल पूल का काम करनेवाले दो मिस्तरी के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखती है। उसकी नजर में यह पाप नही। बतियाँ 'मै' से कहती है। "मै उनके साथ सो चुकी हुँ, कई बार ..... मैने सोचा तुम्हे मेरी जरूरत होगी।"[९] आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों ने स्त्री के अनैतिक सम्बन्ध लिए विवश किया है। मजबुरन बतियाँ जैसी अनेक औरते अनैतिक सम्बन्धों से रोजी रोटी जूटाती है। वही उसकी रोजी है। अनैतिक सम्बन्ध का कारण आर्थिक विषमता है। बिन ब्याही लडकियों ा समस्या वल माँ, बाप, घर-परिवार तक सीमित नही है। यह समस्या आज सामाजिक समस्या बन गयी है। क्योंकि बतियों जैसी अनेक लडकीयाँ आज शादी न होने के कारण गलत रोहो पर चली जाती है। माता और पिता के लिए ये सबसे बडी समस्या बन गई है।

ि ष र्ष :

संक्षेप में यह कह सकते है कि मणि मधुकर की कहानियों में नारी से सम्बन्धीत अनेक समस्याएँ है जो परिवार और समाज से सम्बन्धीत है। "मणि मधुकर की कहानियों में गठन सम्बन्धी बि राव को नजर अंदाज कर दिया जाए तो ये कहानियाँ समकालीन भारतीय जीवन की विडम्बनाओं के प्रति लेखक की जागरुकता का परिचय देती है।"[१०] नारी जीवन की प्रत्येक समस्याओं को मणि मधुकर ने ब ूबी उभारा है। उन्होने अपनी कहानी में नारी को केंद्र बिन्दु बनाकर उनके जीवन में व्याप्त निराशा, अभाव, स्वार्थपरता, सामाजिक प्रथा की घूटन भरी जिन्दगी कों उजागर किया है। रोहिडे के कदावर दरख्त और सुर्य फूलों की साक्षी में इनकी कहानियाँ लिखी गयी है। उनकी कहानी में मानवतावादी, आदर्शवादी दृष्टिकोण मिलता है। सामाजिक रूप को कहानी के माध्यम से उतारा है। कहानी में मानव दुर्बलता के साथ अनुभव की सचाई देखी जा सकती है। समकालीन भारतीय जीवन की विडम्बनाओं का चित्रण अपने साहित्य के माध्यम से मा मधुकर ने किया है। हिन्दी साहित्य वृदि में उनका योगदान सदा सराहनीय रहेगा।

संदर्भ संकेत

१. नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ. साधना शाह, पृष्ठ -१५९
२. सम□ालीन हि-दी □हानियों में -नारी □ विविधरूप-डॉ. घनश्यामदास भुतडा, पृष्ठ -७४
३. हवा में अकेले - मणि मधुकर, पृष्ठ - ५५-५६
४. हवा में अकेले - मणि मधुकर, पृष्ठ - ३९
५. सम□ालीन हि-दी □हा-नी परिदृश्य-रघुवरदयाल पृष्ठ -२१
६. एकवचन बहुवचन - मणि मधुकर, पृष्ठ-६१
७. चुनिंदा चौदह - मणि मधुकर, पृष्ठ -४९, ५०
८. चुनिंदा चौदह - मा□ मधुकर, पृष्ठ -५१
९. त्वमेव माता - मणि मधुकर, पृष्ठ -११९
१०. पत्रि□ा - समीक्षा, अक्तूबर-दिसम्बर १९८०, पृष्ठ-६९
❖ वेबसाईट इंटरनेट

Ade Mantri Ramdhan
Tuljabhavani Mahavidhalaya Tuljapur Tq. Tuljapur Dist. Osmanabad